

कलात्मक जीवन का सार 'कृष्ण'



काम कब अच्छे होते हैं, जब हम अंदर से प्रसन्न और खुश रहते हैं और हमारी

तंग किये। हम थकते ही इसलिए हैं कि हमारे साथ कोई न कोई तुलना में खड़ा होता है।

कृष्ण की बाल लीला से बड़े होने तक की कहानी आप ध्यान से देखो या पढ़ो तो बिल्कुल आपको अपने जीवन से मेल खाती नज़र आयेगी। कृष्ण के चरित्र में एक और चीज़ दिखाई देती है कि वो कार्य करके कभी ये नहीं कहते कि ये मैंने किया। कहते, ये तो बस हो गया। इसका भाव समझते हैं कि जब व्यक्ति किसी कल्याण के लिए कोई कार्य करता, बहुजन हिताय-बहुजन सुखाय के लिए जब कार्य करता है तो न वो जताता है न बताता है। लेकिन यहाँ हम अपने स्व के रथ के लिए सिर्फ कार्य करते हैं माना स्वार्थ के लिए, तो इसलिए बताते और जताते हमारा जीवन दुःख में निकल जाता।

यही जीवन जीने की सबसे बड़ी कला है, यही जीवन की सबसे बड़ी धारणा है। हम सभी जीवन में सिर्फ इसी पुरुषार्थ को अपना लें कि हमें सिर्फ कल्याण के लिए ही कार्य करना है। जिसमें स्व-कल्याण, विश्व-कल्याण समाया हुआ हो। इसलिए पूरे कृष्ण जन्माष्टमी को

सबके साथ रहते, सबको खुश करते, बिना किसी को दुःख पहुंचाये कार्य को किया और चले गये। इसीलिए कृष्ण की बाल लीला हर एक आत्मा की कहानी है। जब वो इस दुनिया में बिल्कुल डिटेचड अनुभव करता है, तो वो सभी का होता है और फिर जब वो कोई कार्य करता है तो माता-पिता को कितनी खुशी होती है! वो बच्चा रात को सोता है और भूल जाता है, सुबह कहो कि आपने ये कार्य किया तो कहेगा पता नहीं। क्या हमारी ऐसी स्थिति है?

'कृष्ण' आकर्षण शब्द से बना है और आकर्षित कौन करता है जो खुश हो, प्रसन्न हो और एकदम अलग हो। वही इस दुनिया में सभी का है और सब उसके हैं। राम जीवन है, कृष्ण कलाकार है, इन दोनों का मात्र एक 'धारणा' ही आधार है।

अब एक शब्द हम पकड़ के चलते हैं, वो है धारणा। इन्होंने पूरे जीवन को एक ऐसी धारणा के साथ बांधा जो उनके चरित्र में व्याप्त है। आप उसी से सीखते हैं, आप उसी को सबको बताते भी हैं कि भाई, अगर जीवन सीखना है तो राम से सीखो, कृष्ण से सीखो। इनके जीवन को झाँककर देखो। इसीलिए शायद कृष्ण की झाँकी लगाई जाती है कि अलग-अलग परिस्थितियों को उन्होंने कैसे जीता, उनको जीत करके सबके सामने एक मिसाल पेश किया कि परिस्थिति को कलात्मक ढंग से कैसे जीता जा सकता है।

आप हमेशा सुनते रहे होंगे कि कृष्ण सोलह कला सम्पूर्ण थे और उनके हाथ में बांसुरी हमेशा दिखाई जाती है। कोई ऐसा अस्त्र-शस्त्र नहीं दिखाया जाता। मतलब मन इतना शांत और निर्मल है कि वो चैन की बांसुरी बजा रहे हैं, ऐसा दिखाते हैं। आप देखो, जीवन में हमारे

खुशी और प्रसन्नता का जो स्तर है उस स्तर से अगर हम किसी कार्य को अंजाम दें तो उस कार्य के अंदर बरकत होती है। और हर कोई जब उस कार्य को देखता है तो कहता है कि मन करता है इस कार्य को देखते रह जायें। मतलब कोई भी कार्य बोल नहीं है। बस उसको करके उससे अलग होना मुख्य धारणा है। आज हम बहुत सारे कार्य एक साथ कर रहे होते हैं, लेकिन कार्य करने के बाद हम थकावट फील करते हैं या अच्छा नहीं लग रहा होता, कहते हैं हर दिन यही कार्य! मन खिन्न-सा हो जाता है। उसका कारण आपने ढूंढा है? उसका कारण क्या हो सकता है? कार्य को अपना न मानना पहला, दूसरा कोई न कोई आपके पास और हो जिसकी तुलना में वो कार्य बार-बार करना कि क्या ये मैं ही करूं! नवीनता भी हम चाहते हैं और करना भी नहीं चाहते हैं। जैसे आपके घर में कोई भी न हो तो आप कैसे हर कार्य कर लेते हैं जल्दी-जल्दी।

वैसे ही दिखाया गया है कि कृष्ण बालपन से बाल लीला कर रहे हैं। लीला माना कार्य। लेकिन उसमें क्या सौ लोग लगे होते थे! चाहे वो कितने सारे राक्षसों का वध दिखाते हैं, लेकिन वे राक्षसों के साथ अकेले लड़ रहे होते थे, परिस्थितियों से अकेले लड़ रहे होते थे, लेकिन खुश होकर, बिना किसी को



बाल लीला के साथ जोड़ा जाता है कि खेल-खेल में सबको हँसाते, बहलाते,

अगर नहीं है तो बनायें और इस जन्माष्टमी पर उसे अपने जीवन का अंग बनायें। तब जाकर सही मायने में कृष्ण को साकार सृष्टि पर हम अनुभव कर पायेंगे।



सीतामढ़ी-बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'नशा मुक्त भारत' प्रोजेक्ट के अंतर्गत निर्मला उत्सव पैलेस में 'मेरा बिहार व्यसन मुक्त बिहार' अभियान का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए संस्थान के मेडिकल विंग के सचिव ब्र.कु. डॉ. बनारसी लाल शाह, सह सचिव ब्र.कु. डॉ. सचिन परब, मुम्बई, सीतामढ़ी के नगर आयुक्त प्रमोद कुमार पांडे, जिविका के डी.पी.एम. उमाशंकर भगत, एसडीओ प्रशांत कुमार, जिला मलेरिया पदाधिकारी रविंदर यादव, जिला प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी एवं तम्बाकू निषेध पदाधिकारी डॉ. सुनील कुमार सिन्हा, ब्र.कु. प्रेम, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. चंदना, ब्र.कु. संजय तथा ब्र.कु. डॉ. फलक।



दिल्ली-करोल बाग (पाण्डव भवन)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में हठयोग और राजयोग का अंतर स्पष्ट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र की डायरेक्टर राजयोगिनी ब्र.कु. पुष्पा दीदी। साथ हैं बाएं से सुनीता खुराना, उपाध्यक्ष, रॉकबॉल एसोसिएशन ऑफ इंडिया, प्रवीण कपूर, अध्यक्ष, श्री हनुमान मंदिर मुल्तानी ढांडा पहाड़गंज, ए.के. सिंह, प्रिंसिपल साइंटिस्ट, आईसीएआर पुसा दिल्ली, अंतर्राष्ट्रीय लॉन गेंदबाज़ पिंकी सिंह तथा ब्र.कु. विजय बहन।



राजसमंद-राज। 'परपेकार सभागार' का उद्घाटन करने के पश्चात् 'सकारात्मक सोच-स्वर्णिम युग की ओर' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में अपने विचार रखते हुए ब्रह्माकुमारीज़ के कार्यकारी सचिव डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय भाई। मंचासीन हैं राजयोगिनी ब्र.कु. पूनम दीदी, सबजोन इंचार, जयपुर राजापार्क, उदयपुर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रीटा दीदी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पूनम बहन तथा अन्य।